पंद्रह शाबान की फज़ीलत में क्या वर्णित है ?

﴿ ما ورد في شأن فضيلة النصف من شعبان ﴾

[*हिन्दी* - **Hindi** - هندي]

इफ्ता और वैज्ञानिक अनुसंधान की स्थायी समिति

अनुवादः **अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह**

2010 - 1431

islamhouse.com

﴿ ما ورد في شأن فضيلة النصف من شعبان ﴾

« باللغة الهندية »

اللجنة الدائمة للبحوث العلمية والإفتاء

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2010 - 1431

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

पंद्रह शाबान की फज़ीलत में क्या वर्णित है ?

प्रश्नः

कुछ विद्वानों का कहना है कि पंद्रह शाबान और उसके रोज़े की फज़ीलत और पंद्रहवीं शाबान की रात को इबादत में गुज़ारने के बारे में हदीसें वर्णित हैं, क्या ये हदीसें शुद्ध (प्रमाणित) हैं, या सही नहीं हैं ? यदि कोई हदीस सही है तो हमें स्पष्ट जानकारी दें, और यदि मामला इसके विपरीत है तो मैं आप से स्पष्टीकरण चाहता हूँ। अल्लाह तआला आप को पुण्य प्रदान करे।

उत्तरः

शाबान के महीने में अधिक से अधिक दिनों का रोज़ा रखने के बारे में सहीह (शुद्ध) हदीसें वर्णत हैं। किन्तु इन में किसी निश्चित दिन को (रोज़ा रखने के लिए) विशिष्ट नहीं किया गया है। उन्हीं हदीसों में से सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कि यह हदीस है कि उन्हों ने कहा :

''मैं ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रमज़ान के अलावा किसी संपूर्ण महीने का रोज़ा रखते हुए नहीं देख। तथा मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शाबान के महीने से अधिक किसी और महीने में (नफली) रोज़ा रखते हुए नहीं देखा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुछ दिनों को छोड़कर पूरे शाबान का रोज़ा रखते थे।'' (सहीह बुखारी : 1869, सहीह मुस्लिम : 782)

तथा उसामा बिन ज़ैद की हदीस में है कि उन्हों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा :

''ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आप को किसी महीने में इतना रोज़ा रखते हुए नहीं देखता जितना आप शाबान के महीने में रोज़ा रखते हैं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उत्तर दिया :

''रजब और रमज़ान के बीच यह ऐसा महीना है जिस से लोग गाफिल (निश्चेत) रहते हैं, तथा यह ऐसा महीना है जिस में आमाल अल्लाह रब्बुल आलमीन की तरफ पेश किये जाते हैं। अतः मैं पसंद करता हूँ कि मेरा अमल इस हाल में पेश किया जाये कि मैं रोज़े से रहूँ।'' (मुसनद अहमद 5/201)

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह प्रमाणित नहीं है कि आप शाबान के किसी निर्धारित दिन को तलाश करके उसका रोज़ा रखते थे,

या उसके कुछ दिनों में विशिष्ट रूप से रोज़ा रखते थे। किन्तु पंद्रह शाबान की रात को क़ियामुल्लैल (इबादत) करने और उस के दिन को रोज़ा रखने के बारे में ज़ईफ (कमज़ोर एवं अप्रमाणित) हदीसें वर्णित हैं। उन्हीं में से वह हदीस है जिसे इब्ने माजा ने अपनी सुनन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि आप ने फरमाया :

''जब पंद्रह शाबान की रात हो तो उसकी रात को क़ियाम (रात को जाग कर इबादत) करो और उसके दिन को रोज़ा रखो। क्योंकि अल्लाह तआला उस में सूरज डूबने के समय दुनिया के आकाश पर उतरता है, और कहता है : क्या कोई बख्शिश मांगने वाला नहीं कि मैं उसे बख्श दूँ, क्या कोई रोज़ी मांगना वाला नहीं कि मैं उसे रोज़ी प्रदान कर दूँ, क्या कोई पीड़ित व्यक्ति नहीं कि मैं उसके संकट का मोचन कर दूँ। क्या कोई ऐसा नहीं, क्या कोई ऐसा नहीं, यहाँ तक कि फज्र उदय हो जाती है।'' (सुनन इब्ने माजा : 1388)

इब्ने हिब्बान ने पंद्रह शाबान की रात को इबादत में गुज़ारने के बारे में वर्णित कुछ हदीसों को सही कहा है, उसी में से वह हदीस है जिसे उन्हों ने अपनी सहीह में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है कि उन्हों ने कहा :

''(एक रात) मैं ने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को (बिस्तर पर) गुम पाया, चुनाँचि मैं बाहर निकली तो आप को बक़ीअ् में पाया आप आसमान की तरफ अपना सिर उठाए हुए थे। आप ने फरमाया : ''क्या तुझे इस बात का भय था कि अल्लाह और उसके रसूल तेरे साथ अन्याय करेंगे? मैं ने कहा : ऐ अल्लाह के पैगंबर, मैं यह समझ रही थी कि आप अपनी पत्नियों में से किसी के पास गए हैं। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : अल्लाह तआला पंद्रह शाबान की रात को दुनिया के आकाश

पर उतरता है और कल्ब नामी क़बीले की बक्रियों के बालों से भी अधिक संख्या में लोगों को क्षमा प्रदान कर देता है।'' (तिर्मिज़ी हदीस संख्या : 739)

इमाम बुखारी आदि ने इस हदीस को ज़ईफ कहा है। और अधिकतर विद्वान पंद्रह शाबान की रात और उसके दिन के रोज़े की फज़ीलत में जो कुछ आया है उसे ज़ईफ समझते हैं। तथा हदीस के विशेषज्ञों के निकट हदीसों को सहीह घोषित करने में इब्ने हिब्बान की लापरवाही सुप्रसिद्ध है।

सारांश यह कि पंद्रह शाबान की रात को इबादत में गुज़ारने और उसके दिन के रोज़े की फज़ीलत में वर्णित हदीसों में से कोई भी हदीस, हदीस के विशेषज्ञों के निकट शुद्ध और प्रमाणित नहीं है। इसीलिए उन्हों ने उसकी रात को क़ियाम करने (इबादत में बिताने) और उस के दिन को रोज़ा रखने का इनकार किया है और उसे बिद्अत क़रार दिया है।

जबकि इबादत गुज़ारों के एक समूह ने ज़ईफ हदीसों पर भरोसा करते हुए इस रात को सम्मानित और महत्वपूर्ण क़रार दिया है, और उनके बारे में यह चीज़ प्रचलित और प्रसिद्ध हो गई। चुनाँचि लोगों ने, उनके साथ अच्छा गुमान रखते हुए, इस चीज़ में उनका अनुसरण किया। बल्कि कुछ लोगों ने पंद्रहवीं शाबान की रात का अत्यंत सम्मान करते हुए यहाँ तक कह दिया कि : यही वह शुभ और मुबारक रात है जिस में कुरआन उतारा गया है, इसी (रात) में हर हिकमत वाले काम का फैसला किया जाता है, और इसे अल्लाह तआला के इस फरमान की व्याख्या क़रार दिया है :

﴿ إِنَّآ أَنزَلۡنَٰهُ فِي لَيۡلَةٖ مُّبَٰرَكَةٍۚ إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ ٣ فِيهَا يُفۡرَقُ كُلُّ أَمۡرٍ حَكِيمٍ ٤ ﴾

[الدخان: ٣ - ٤]

"निःसन्देह हम ने इसे एक मुबारक रात में उतारा है। निःसन्देह हम डराने वाले हैं। इस (रात) में हर हिकमत वाले काम का फैसला किया जाता है।" (सूरतुद्दुखानः 3–4)

हालांकि यह एक स्पष्ट गलती है और कुरआन में परिवर्तन करना और उसके शुद्ध अर्थ को बदल डालना है। क्योंकि उक्त आयत में मुबारक रात से अभिप्राय लैलतुल क़द्र (शबे क़द्र) है, जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ إِنَّآ أَنزَلۡنَٰهُ فِي لَيۡلَةِ ٱلۡقَدۡرِ ١ ﴾ [القدر: ١]

"निःसन्देह हम ने इसे (अर्थात कुरआन को) क़द्र (प्रतिष्ठा और सम्मान) की रात में उतारा है।" (सूरतुल क़द्र : 1)

और लैलतुल क़द्र रमज़ान के महीने में है, जैसाकि इस विषय में वर्णित हदीसों से पता चलता है। तथा अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ شَهۡرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِيٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلۡقُرۡءَانُ هُدٗى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَٰتٖ مِّنَ ٱلۡهُدَىٰ وَٱلۡفُرۡقَانِۚ ﴾ [البقرة: ١٨٥]

"रमज़ान का महीना वह है जिसमें कुरआन उतारा गया जो लोगों के लिए मार्गदर्शक है और जिसमें मार्गदर्शन की और सत्य तथा असत्य के बीच अन्तर की निशानियाँ हैं।" (सूरतुल बक़रा : 185)

और अल्लाह तआला ही तौफीक़ देने वाला है, तथा अल्लाह तआला हमारे पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दया और शांति अवतरित करे।

इफ्ता और वैज्ञानिक अनुसंधान की स्थायी समिति के फतावा (3/61) से।